रविवासरीय

हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

रविवार, 05 फरवरी 2017, बरेली, पांच प्रदेश, 20 संस्करण

www.livehindustan.com

वर्ष 8, अंक 6, 20 पेज+4 पेज मूवी मैजिक, मूल्य 4.00

दूसरे भारतीय

क्रिकेट की बाइबल कही जाने वाली 'विजडन' पत्रिका ने अपने नए सालाना अंक में विराट कोहली को कवर पेज पर छापा है। इससे पहले 2014 में सचिन तेंदुलकर कवर पेज पर दिखे थे।

विश्व कैंसर दिवस पर एसआरएमएस में सर्वाइवर्स मीट, लोगों ने सुनाई बीमारी से संघर्ष की कहानी

कैंसर का इलाज कराएं, जीवन बचाएं

बरेली | कार्यालय संवाददाता

विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर एसआरएमएस इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज की ओर से शनिवार को सर्वाइवर्स मीट का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में वे मरीज आए थे जिन्होंने कैंसर जैसी बीमारी को हराकर अब सामान्य जीवन जी रहे हैं। इन लोगों को प्रबंधन ने सम्मानित किया।

कार्यक्रम में कैंसर को हराकर मिसाल कायम करने वाले 50 से भी अधिक मरीजों और उनके परिवारों को सम्मानित किया गया। साथ ही अपील की कि वे औरों को भी जागरुक करें कि कैंसर लाइलाज नहीं है, समय रहते डॉक्टर को दिखाएं और सही इलाज पाकर अपना जीवन बचाएं। मुख्य अतिति चेयरमैन देव मूर्ति ने कहा कि कैंसर को हराने वाले ये लोग पूरे समाज के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं जहां कैंसर का नाम सुनकर अक्सर लोग डर जाते हैं। कैंसर भयानक जरूर है, मगर लाइलाज नहीं। समय रहते इलाज करा लो तो कैंसर ठीक हो जाएगा। बताया कि एसआरएमएस में विश्वस्तरीय इलाज की सुविधा है। कम कीमत पर इलाज, बीपीएल परिवारों को अतिरिक्त छूट की सुविधा है। रेडियोथेरेपी के विभागाध्यक्ष डॉ. पीयूष अग्रवाल ने बताया कि कैंसर इंस्टीट्यूट सभी उच्चस्तरीय कैंसर इलाज प्रणालियों जैसे लीनियर एक्सीलिएटर टू बीम, एचडीआर ब्रेकीथेरेपी, कीमोथेरेपी, कैंसर सर्जरी आदि सुविधाएं उपलब्ध हैं।

विश्व कैंसर दिवस पर शनिवार को एसआरएमएस परिसर में सर्वाइवर्स मीट हुई।

ये लोग रहे मौजूद

निदेशक आदित्य मूर्ति, डॉ. अरविंद चौहान, सुभाष मेहरा, प्रिंसिपल डॉ. आरसी पुरोहित, डॉ. एसके हांडा, डॉ. एचओ अग्रवाल, डॉ. पवन कुमार, डॉ. रितु भूटानी, डॉ. सुभांशु गुप्ता, डॉ. रोहित शर्मा, डॉ. शशांक साह, डॉ. जेके गोयल।

2012 में बीमार हुए, जांच में कैंसर निकला। डॉक्टरों ने एक फेफड़ा सिकुड़ जाने की बात बताई तो पत्नी और बच्चों का हाल खराब हो गया। डॉक्टरों ने हौसला बांधा और इलाज कराने की सलाह दी। करीब तीन महीने तक इलाज चला, कीमोथेरेपी के माध्यम से कैंसर खत्म हो गया। आज सामान्य जीवन जी रहा हूं।

– सर्वेश सक्सेना, पुवायां, शाहजहांपुर

पांच साल पहले गले में गांठे हो गई थीं। आवाज तक ठीक से नहीं निकल रही थी। आवाज बदल जाने पर डॉक्टरों को दिखाया। जांच में पता चला कि कैंसर है तो लखनऊ, मुंबई से लेकर न जाने कहां-कहां दिखाया। अंत में एसआरएमएस में तीन महीने इलाज चला। कीमोथेरेपी से पूरी तरह ठीक हो गया। – अरशद सईद, पीलीभीत

पूरे परिवार ने मिलकर लड़ी कैंसर की जंग

बरेली। ये हैं नौ साल के मास्टर प्रियांशु। कोई नहीं कह सकता कि पांच साल पहले चार साल की उम्र में इन्हें कैंसर था। नन्हे प्रियांशु के साथ उनके माता-पिता ने भी कैंसर की जंग बराबरी से लड़ी है। पूरा परिवार इस त्रासदी से गुजरकर उबरा है। सीख सिर्फ यही है कि कैंसर को हावी होने से पहले ही हमला बोल दिया और जानलेवा बीमारी को हमेशा के लिए खत्म किया।

प्रियांशु के पिता राजेंद्र सिंह ने बताया कि पांच साल पहले की बात है, जब उनके इकलौते बेटे प्रियांशु के गले में गांठें हो गई थीं। कई जगह इलाज कराया मगर बात नहीं बनी, अंत में एसआरएमएस आए तो जांच हुई जिसमें कैंसर का पता चला। यह बात पता चली तो मानो पैरों के नीचे की जमीन खिसक गई थी। मासूम प्रियांशु को देखकर कोई नहीं कह सकता था कि यह मौत के मुंह में है। पूरा परिवार टेंशन में आ गया था, मगर धैर्य से काम लिया। पत्नी बविता बेटे को लेकर परेशान जरूर थी मगर उनकी ही बदौलत पूरे परिवार को हिम्मत मिली। लगातार इलाज कराया, करीब छह महीने के इलाज के बाद प्रियांशु नॉर्मल हो गया। अब जहां भी मौका मिलता है कैंसर के प्रति जरूर बोलता हूं। लोगों को जागरुक करता हूं कि समय रहते इलाज करा लो तो कैंसर से मुक्ति भी आम बीमारियों की तरह ही मिल जाएगी।

कैंसर की जंग जीत कर खुशहाल जीवन जी रहे प्रियांशु माता पिता के साथ।

2009 में मुझे यूट्रस का कैंसर हुआ। जांच में कैंसर की बात पता चली तो बहुत घबराहट हुई मगर हौसला कायम रखा। इलाज कराया और ऑपरेशन के बाद बिल्कुल ठीक हो गई हूं। अब तो लगता भी नहीं कि मुझे कभी कैंसर जैसी कोई समस्या थी। कैंसर से घबराएं नहीं, इसका डटकर मुकाबला करें, ठीक से इलाज कराएं। आप नहीं डरे तो कैंसर खुद डर जाएगा। – ऊमा माहेश्वरी, इज्जतनगर